GLOBAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES UGC APPROVED ISSN: - 2348-0459
www.gjms.co.in
Volume-6, Issue-8, July 2017 Impact Factor: 3.987

Paper ID: UGC 48846-933

सम्पूर्णानन्द जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व का समीक्षात्मक विश्लेषण

डॉ. अशोक कुमार

सारांश सम्पूर्णानन्द 20वीं सदी के भारतीय नेताओं में अपना विशेष स्थान रखते है। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों की उल्लेखनीय है। उनका जन्म काशी के एक सामान्य परिवार में हुआ था। उन्होनें बी.एम.सी., एल.टी. तक शिक्षा प्राप्त की थी। उनका सामाजिक, राजनीतिक जीवन एक शिक्षक के रूप में प्रारम्भ हुआ था। राजनीतिक नेताओं में वे महात्मा गांधी, लाला लाजपतराय, पुरूषोत्तम दास टण्डन, जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस, डा. राजेन्द्र प्रसाद, गोविन्द बल्लभ पन्त, रवीन्द्रनाथ टैगोर, मदन मोहन मालवीय से प्रभावित रहे। सम्पूर्णानन्द का व्यक्तित्व एवं कृतित्व विभूति सम्पन्न है। उनके सामाजिक और राजनीतिक जीवन का प्रारम्भ एक विद्या मन्दिर से हुआ। अपनी योग्यता, प्रतिभा एवं तेज के बल पर वे राज्यपाल कि स्थिति तक पहुंचे। उनका सम्पूर्ण जीवन समस्याओं और संघर्षो की तीव्र अग्नि में तपकर स्वर्ण की भांति कान्तिमय बना। सम्पूर्णानन्द की भारतीय दर्शन, अध्यात्म एवं संस्कृति में गहरी आस्था थी, उन्होनें किसी भी राजनैतिक या सामाजिक सिद्धान्त एवं विचारधारा को बिना समझे बूझे कभी स्वीकार नहीं किया। किसी विदेशी उपलब्धि या कार्यपद्वति की अनुकूलता को देखा। उन्होनें भारतीय परिवेश में प्रत्येक समस्या को सोचा, समझा और निर्णय निकाले। उनके प्रत्येक लेख में भारतीय चिन्तन एवं संस्कति के प्रति वह गौरवाभिमान दिखता है। जो आज के नेताओं, विचारको और लेखकों में लुप्त प्रायः है।

शब्दकोश कार्यपद्वति की अनुकूलता ,चिन्तन एवं संस्कति

प्रस्तावना

जीवन चरित्रः–

सम्पूर्णानन्द 20वीं सदी के भारतीय नेताओं में अपना विशेष स्थान रखते है। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों की उल्लेखनीय है। उनका जन्म काशी के एक सामान्य परिवार में हुआ था। उन्होनें बी.एम.सी., एल.टी. तक शिक्षा प्राप्त की थी। उनका सामाजिक, राजनीतिक जीवन एक शिक्षक के रूप में प्रारम्भ हुआ था। राजनीतिक नेताओं में वे महात्मा गांधी, लाला लाजपतराय, पुरूषोत्तम दास टण्डन, जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस, डा. राजेन्द्र प्रसाद, गोविन्द बल्लभ पन्त, रवीन्द्रनाथ टैगोर, मदन मोहन मालवीय से प्रभावित रहे। उनके समकालोन राजनैतिक घटनाओं ने भी व्यापक रूप से प्रभावित किया उन्हें राजनीति में प्रवेश के समय सम्पूर्ण एशिया एवं अफ्रीका में राष्ट्रीय भावना प्रबल हो रही थी। भारत में गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन तीव्र गति से चल रहा था। अंग्रज सरकार की दमनात्मक नीतियों से सम्पूर्णानन्द, उत्तेजित थे। परिवार की रक्षा का दायित्व ईश्वर पर छोड़ने का निश्चय करक सम्पूर्णानन्द बीकानेर कालेज का प्रधानाध्यापक का पद त्यागकर स्वतन्त्रता संघर्ष में प्रवृत्त हो गये।

सात्विक जीवन–

व्यक्तिगत जीवन में सम्पूर्णानन्द ने सदैव मर्यादित जीवन व्यतीत किया, इसलिये उनकी आस्थायें कठोर अनुशासन की अपेक्षायें रखती थी। प्रायः ऐसा हुआ कि उनके अनुशासन से थोड़े समय के लिए लोगों को आलोचना का अवसर मिला हो, किन्तु निरपेक्ष दृष्टि से विचार करने पर उनके विरोधी भी उनके आदर्शो की प्रशंसा करते थे। शिक्षा, राजनीति तथा पारिवारिक मामलों में उन्होनें कभी आदर्श से हटकर कार्य नहीं किया।

उन्होनें सदैव पवित्र और तपामय जीवन व्यतीत किया। एक और यदि माध के सवेरे 4 बजे रात के रखे हुये ठंडे पानी से स्नान करक खुले मैदान में बैठकर आपको पूजन करते हुये देखकर आश्चर्य होता है तो दूसरी और छोटे से कमरें में भीषण गर्मी में पुस्तकों के बीच बैठे हुए ग्रन्थों की रचना करते हुये देख कर विस्मय नहीं होता हे। सम्पूर्णानन्द के जीवन में पुत्र शोक पत्नी शोक सभी आया परन्तु उन्होनें उसको बड़े साहस के साथ सहन किया। 20 वर्षीय ज्येष्ट पुत्र का दाह कर्म समाप्त कर वे वैसे ही लोटे जैसे कुछ हुआ ही न हो। उनके हृदय की कठोरता युवाकाल और प्रौढ़ावस्था में वैसी ही बनी रही कर्तव्य के लिए वह सब कुछ सहने को तैयार है।

पत्रकार एवं लेखकः–

सम्पूर्णानन्द एक प्रभावशाली पत्रकार एवं विख्यात विचारक व लेखक थे। उन्होने 'मर्यादा' मासिक पत्रिका, हिन्दी दैनिक 'आज', अंग्रेजी दैनिक 'टुडे' तथा हिन्दी साप्ताहिक 'जागरण' का प्रभावशाली सम्पादन किया। उन्होनें हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी में राजनीतिक, ऐतिहासिक एवं दार्शनिक विषयों पर लगभग 35 पुस्तक लिखी। उनकी समाजवाद पुस्तक पर उन्हें हिन्दी सहित्य

Paper ID: UGC 48846-933

सम्मेलन द्वारा मंगलाप्रसाद पारितोषिक एवं मुरारका पारितोषिक प्राप्त हुआ। जिन लोगों को राजनीतिक जीवन का अनुभव है, और जो उनके जीवन के बारे में जानते है, वे यह भंलो भांति समझ सकते है कि एक मन्त्री, मुख्यमन्त्री या राज्यपाल के लिए लेखन कार्य कितना कठिन होता है। परन्तु सम्पूर्णानन्द उन विलक्षण लोगों में से थे, जो समस्त कठिनाइयों के बावजूद अपने चिन्तन मनन के लिये समय निकालते थे न केवल समय निकालते थे, अपितु जन सामान्य की अपनो विद्वता और पाण्डित्य से लाभान्वित करते थे।

विभिन्न राजनीतिक नेताओं के विचार

उत्तर प्रद्रश के प्रथम मुख्यमन्त्री स्वर्गीय गोविन्द वल्ल्लभ पन्त के शब्दों में ''सम्पूर्णानन्द केवल उच्चकोटी के विद्वान व लेखक ही नहीं है, उनकी व्यावहारिकता कर्मठता विद्वता से कम नहीं है। तीस वर्ष तक स्वतन्त्रता की लड़ाई में और अब राष्ट्रनिर्माण के काम में उनका जो हिस्सा है उसके लिए यह प्रान्त उनका सदैव ऋणी रहेगा। उनका सांस्कृतिक स्तर उनका शुद्ध व स्वच्छ जीवन, सत्यनिष्ठा, स्वाभिमान हमारे सार्वजनिक जीवन के आदर्श ह।

भूतपूर्व प्रधानमन्त्री स्व. लालबहादुर शास्त्राी के अनुसार ''सम्पूर्णानन्द हमारे प्रान्त की विभूति है। हमारे प्रान्त तथा देश में उन थोड़े से सार्वजनिक नेताओं में उनकी गणना है। जो महान पण्डित, विचारक तथा लेखक है। अपने विचार तथा कार्य दोनों में वह बली है।

भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व. राजेन्द्र प्रसाद के मत में सम्पूर्णानन्द भारत के उन सपूतों में है जिन्होनें अपनी सेवा केवल राजनीतिक क्षेत्र में ही नहीं कि है पर उसके साहित्यक उत्थान में भी कम काम नहीं किया है। जब जब जरूरत पड़ी आपने जेल यात्रा कि ओर समय आने पर मन्त्राी पद को योग्यतापूर्वक सुशोभित कर रहे हे। आप जैसे उत्कृष्ट विद्वान है, वैसे ही सफल मन्त्री और शासक भी है।''

उत्तर प्रदेश की समकालीन राजीनति में सम्पूर्णानन्द के विरोधी स्व. चन्द्रभानु गुप्ता के शब्दों, ''वे देश की राजनीति में उनका महत्वपूर्ण स्थान था। वे एक और जहां पुराण शास्त्रों में पंडित थे वहीं दूसरी ओर उनका चिन्तन समाजवाद जैसी नवीनतम दर्शन पद्धति से जुड़ा हुआ था। निष्पक्ष, तथ्यवादी, स्पष्ट वक्ता अटल तथा उद्यमी सम्पूर्णानन्द एक साथ ही एक कवि, निबन्धकार, आलोचक कथाकार तथा पत्रकार थे।

प्रख्यात राजनीतिक लेखक डा. भूवनेश्वर सिंह गहलोत के मत में, ''सम्पूर्णानन्द आचार विचार तथा नैतिकतायुक्त प्रशासक तथा दलगत भेदों से निष्पक्ष राजनेता थे। देश और प्रदेश उनको न्याय, निष्ठा, साहस और प्रशासक तथा लेखक के रूप में समाज के लिए प्ररेकर बने रहेगें। सम्पूर्णानन्द विभिन्न विषयों के प्रकांड विद्वान ही नहीं, स्वतन्त्रता संगाम के सेनानी तथा कुशल राजनीतिज्ञ भी थे। उनकी राजनीति, साहित्य तथा लोक सेवा में भारतीय तत्वज्ञान सूक्ष्म भाव से समाहित थे। विभिन्न क्षेत्रों में उनकी अमूल्य सेवाओं के कारण आधुनिक उत्तर प्रदेश के निर्माताओं में उनका महत्वपूर्ण स्थान है।

सम्पूर्णानन्द की मौलिक विद्वता से प्रभावित होकर आगरा विश्वविद्यालय, लखनउ विश्वविद्यालय तथा काशी विद्यापीठ ने उकनो 'डाक्टरेट' की मानद उपाधि से विभूषित किया। लखनउ विश्वविद्यालय ने अपने प्रशस्ति पत्र में उन्हें 'विद्वानों का विद्वान' घोषित किय था।

समीक्षाः–

सम्पूर्णानन्द का व्यक्तित्व एवं कृतित्व विभूति सम्पन्न है। उनके सामाजिक और राजनीतिक जीवन का प्रारम्भ एक विद्या मन्दिर से हुआ। अपनी योग्यता, प्रतिभा एवं तेज के बल पर वे राज्यपाल कि स्थिति तक पहुंचे। उनका सम्पूर्ण जीवन समस्याओं और संघर्षो की तीव्र अग्नि में तपकर स्वर्ण की भांति कान्तिमय बना। सम्पूर्णानन्द की भारतीय दर्शन, अध्यात्म एवं संस्कृति में गहरी आस्था थी, उन्होनें किसी भी राजनैतिक या सामाजिक सिद्धान्त एवं विचारधारा को बिना समझे बूझे कभी स्वीकार नहीं किया। किसी विदेशी उपलब्धि या कार्यपद्वति की अनुकूलता को देखा। उन्होनें भारतीय परिवेश में प्रत्येक समस्या को सोचा, समझा और निर्णय निकाले। उनके प्रत्येक लेख में भारतीय चिन्तन एवं संस्कति के प्रति वह गौरवाभिमान दिखता है। जो आज के नेताओं, विचारको और लेखकों में लुप्त प्रायः है।

क्या सम्पूर्णानन्द मौलिक विचारक हैं? विचारों के इतिहास में मौलिकता तो इस बात में होती है कि तत्कालीन परिस्थितियों में वह पूर्व विचारकों को किस प्रकार व्याख्या करता है तथा उन्हें किस प्रकार प्रस्तुत करता है। इस दृष्टि से सम्पूर्णानन्द को हम मौलिक विचारक कह सकते हैं। उन्होनें राजनीति के ज्वलंत प्रश्नों व्यक्ति और राज्य तथा राज्य और समाज एवं व्यक्ति के अपेक्षित सम्बन्धों पर गंभीर चर्चा की है। इस तरह उन्होनें राजनीतिशास्त्र के इस मूल एवं शाश्वत प्रश्न राज्य की सत्ता एवं व्यक्ति की स्वतन्त्रता में क्या अनुपात होना चाहिए, पर विचार किया।

पाश्चात्य लोकतन्त्रिक समाजवाद तथा सामाजिक राजनैतिक समस्सयाओं के संदर्भ में उन्होनें भारतीय विकल्प प्रस्तावित किये है। सम्पूर्णानन्द स्वप्नलोकोय विचारक न होकर विशुद्ध व्यवहारवादी विचारक व राजनीतिज्ञ थे।

Paper ID: UGC 48846-933

सम्पूर्णानन्द निष्कपट निर्मल हृदय उदार वं शोषण के तीव्र विरोधी थे, वे जो सोचते थे वहीं करते भी थे। सामाजिक एवं व्यक्तिगत नैतिकता के शून्य एवं सिद्धान्तों के प्रति वे निरन्तर सोचते रहे। इसके प्रतिफलस्वरूप नैतिकता उनके विचार और कार्यो का आधार थी। ये एक व्यवहारिक आदर्शवादी के पूर्वाग्रह से मुक्त थे। वे वैज्ञानिक ढंग से सोचते थे। उनमें सदैव परीक्षण एवं निरीक्षण निरन्तर चलता रहता था। सस्ती लोकप्रियता के लिए उन्हें अपना अभीष्ट मार्ग त्यागना नापसन्द था। स्वतन्त्रता संघर्ष काल में देश के निर्विवाद नेता महात्मा गांधी के विचारों तक की सम्पूर्णानन्द ने आलोचना की थी। खादी, हिन्दी, ट्रस्टीशिप सिद्धान्त आदी के संदर्भ में उनके विचार प्रथक थे और इस सम्बन्ध में वे अडिग रहे थे।

सम्पूर्णानन्द एक निर्भीक, स्वतन्त्रता संघर्ष योद्धा के साथ–साथ एक निर्भीक प्रशासक तथा निर्विवाद विद्वान थे। वे अथक संघर्ष करने की क्षमता से युक्त थे। वे राष्ट्रभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट समर्थक थे।

भारतीय दर्शन, समाजवाद, लोकतन्त्र, मानवीय स्वतन्त्रता के प्रबल समर्थक व विद्वान तथा समाज सुधारक एवं लोकतान्त्रिक समाजवादी के रूप में उनका सदैव स्मरण होता रहेगा।

संदर्भः–

1. *दिनमान साप्ताहिक 19 जनवरी 1999, पृ. 14*
2. *विश्वनाथ शर्माः सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ. 41*
3. *भगवतीशरण सिंहः पूर्वोन्त, पृ. 30*
4. *सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ. 17*
5. *सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ. 18*
6. *सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ. 19*
7. *सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ. 26*
8. *गहलोत भुवनेश्वर सिंहः उत्तर प्रदेश की महान विभूतियाः सम्पूर्णानन्द पृ. 103.*

*****